महाराष्ट्री प्राकृत भाषा एवं कोंकणी

राहुल शांतिनाथ उपाध्ये

प्रस्तावना

भाषा वह साधन या माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावों और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाता है और उनके विचारों को समझता है। यह व्यक्तियों के बीच संबंध स्थापित करने और समुदाय बनाने का अनिवार्य साधन है। भाषा के बिना सामूहिक सामाजिक क्रिया संभव नहीं है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने जटिल विचारों, भावनाओं और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचा पाता है।

भाषा मनुष्य के लिए केवल बातचीत का जरिया नहीं, बल्कि सर्वांगीण विकास का आधार है। शिक्षा का आधार भाषा है। विज्ञान, इतिहास और कला की समस्त जानकारी भाषा के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है। भाषा किसी भी समाज की परंपराओं, मूल्यों और इतिहास की वाहक होती है। यह सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखती है। भाषा सीखने से हम दूसरी संस्कृतियों के प्रति अधिक सहनशील और उदार बनते हैं, जिससे आपसी समझ बढ़ती है। संक्षेप में, भाषा वह सेतु है जो मनुष्य को समाज, ज्ञान और उसकी अपनी पहचान से जोड़ता है।

भारोपीय (Indo-European) भाषा परिवार दुनिया का सबसे बड़ा भाषाई परिवार है। दुनिया की लगभग 45% आबादी इस परिवार की भाषाएं बोलती है। इसमें यूरोप, दक्षिण एशिया (भारतीय उपमहाद्वीप) और ईरान की अधिकांश प्रमुख भाषाएं शामिल हैं इसमें प्रमुख भाषाएं हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, स्पेनिश, रूसी, पुर्तगाली, बंगाली, पंजाबी, जर्मन, फ्रेंच और फारसी इसी परिवार का हिस्सा हैं। ये सभी भाषाएं एक ही प्राचीन भाषा से निकली हैं, जिसे 'आदि-भारोपीय भाषा' (Proto-Indo-European) कहा जाता है। इस भाषा परिवार कि प्रमुख शाखाएं (Branches) भारत-ईरानी (Indo-Iranian): इसमें हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, पंजाबी और फारसी, जर्मेनिक (Germanic) में अंग्रेजी, जर्मन और डच, रोमांस (Romance) में लैटिन से निकली भाषाएं जैसे स्पेनिश, फ्रेंच और इतालवी, बाल्टो-स्लाविक (Balto-Slavic) इसमें रूसी और पोलिश और यूनानी (Greek) में आधुनिक और प्राचीन ग्रीक भाषाये मानी जाती है।

प्राकृत प्राचीन भारत की उन लोकभाषाओं का समूह है जो मध्य भारतीय-आर्य काल लगभग 600 ईसा पूर्व से 1000 ईस्वी के दौरान प्रचलित थीं। संस्कृत जहाँ विद्वानों और उच्च वर्ग की परिष्कृत भाषा थी,

वहीं प्राकृत आम जनता की बोलचाल की भाषा थी। भगवान महावीर ने अपने उपदेश अर्धमागधी प्राकृत में दिए थे। जैन धर्म के अधिकांश प्राचीन आगम ग्रंथ इसी भाषा में रचित हैं। सम्राट अशोक के अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं, जिससे इसकी तत्कालीन व्यापकता सिद्ध होती है। प्राकृत साहित्य अत्यंत समृद्ध है, जिसमें नाटक महाकाव्य और व्याकरण ग्रंथ शामिल हैं। वररुचीद्वारा प्राकृतप्रकाश, आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' प्राकृत व्याकरण के महत्वपूर्ण ग्रंथ है। आधुनिक हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का विकास प्राकृत से अपभ्रंश और फिर वर्तमान स्वरूप में हुआ है। यह प्राकृत हिन्दी की जननी मानी जाती है। उस प्राकृत कि प्रादेशिक बोलीयो के नाम इस प्रकार है। मथुरा के आसपास के क्षेत्र में शौरसेनी, मागधी जो मगध (आधुनिक बिहार) क्षेत्र की भाषा, महाराष्ट्री दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में प्रचलित और काव्य के लिए प्रसिद्ध है।

भारतीय भाषाओंका इतिहास अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है। भारतीय आर्य भाषाओंके विकासक्रम में 'प्राकृत' भाषा का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'प्राकृत' शब्द का अर्थ 'नैसर्गिक' या 'लोकद्वारा सहज बोली जानेवाली भाषा' है। जिस समय संस्कृत विद्वान और संस्कार युक्त भाषा थी, इसी समय जनसामान्य के व्यवहार की भाषा प्राकृत विकसित हुई। महाराष्ट्री प्राकृत इन सभी प्राकृत भाषाओ में शिरोमणी मानी जाती है, एवं इसने मराठी आदि भाषा ओंकी नीव रही, सिवाय इसमें उत्तमोत्तम साहित्य की निर्मिती हुई।

1. प्राकृत भाषा के प्रारंभिक रूप: 'प्राकृत' शब्द के संदर्भ में विद्वान लोगो में दो मुख्य विचार हैं:

2. प्राकृत (संस्कृत) से जन्म: कुछ वैयाकरण के अनुसार, 'संस्कृत' प्राकृत (ओरिजिनल) है और जो भाषा इसे तोड़-मरोड़कर या बदलकर बन गई, वह प्राकृत है।

3. नैसर्गिक भाषा: आज के भाषा जानकारों के अनुसार, 'प्राकृत' का मतलब लोग हैं। लोगों की नैसर्गिक भाषा प्राकृत है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसे इन लोक भाषाओं को मिलाकर बनाया गया। पुरातत्वीय दृष्टी से इसे देखते हैं, तो हमें 5वीं सदी BC से प्राकृत के साक्ष्य मिलते हैं। 500 साल बाद, संस्कृत के लिखित हुए साक्ष्य मिलते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, माना जाता है कि प्राकृत की शुरुआत 500 BC और 1000 AD के बीच हुई थी। यह भाषा संस्कृत की तुलना में बोलने में आसान और ग्रामर के हिसाब से कम मुश्किल थी, जिससे यह आम लोगों के लिए ज़्यादा आसान हो गई।

प्राकृत के विकास चरण : इंडो-आर्यन भाषाओं के विकास में तीन मुख्य समय माने जाते हैं.

प्राचीन भारतीय भाषाएँ (1500 BC से 500 BC): इसमें वैदिक संस्कृत साहित्यिक संस्कृत शामिल हैं।

मध्यकालीन भारतीय भाषाएँ (500 BC से 1000 AD): यह 'प्राकृत' भाषाओं का सुनहरा दौर है। इसके तीन चरण हैं:

आधुनिक भारतीय भाषा काल १० वीं सदी से लगभग वर्तमान

प्राकृत के मुख्य प्रकार:

महाराष्ट्री प्राकृत: इसे सबसे प्रचलित प्राकृत माना जाता है।

शौरसेनी: मुख्य रूप से मथुरा प्रदेश में प्रचलित।

मागधी: मुख्य रूप से ईस्ट इंडिया में प्रचलित।

अर्धमागधी: जैन धर्मग्रंथों की भाषा, पश्चिमी मगध कि भाषा

महाराष्ट्री प्राकृत की विशेषताये:

1. स्वर बहुलता: इस भाषा में, व्यंजन लोप, स्वर बहुल हो गए। इससे यह भाषा बहुत मृदू एवं गीत के लिए बनी।

2. मराठी की जननी: आधुनिक मराठी भाषा का प्राचीन रूप महाराष्ट्री प्राकृत में मिलता है।

3. कविता की भाषा: शौरसेनी या दूसरी प्राकृत का इस्तेमाल नाटको में पात्रो के लिए किया जाता था, लेकिन महाराष्ट्री का इस्तेमाल मुख्य रूप से कविता के लिए किया जाता था।

सातवाहन और प्राकृत भाषा: सातवाहन काल को सच में प्राकृत का स्वर्ण काल माना जाता है। यह काल महाराष्ट्र के इतिहास में बहुत महत्त्व रखता है, इस काल में महाराष्ट्री प्राकृत भाषा को राजकीय संरक्षण मिला और यह पूरी तरह से एक लोक भाषा के तौर पर स्थापित हो गई।

सातवाहन राजाओं ने प्राकृत को अपनी राजभाषा बनी, इससे राजकिय संरक्षण प्राप्त हुआ।, इस कारण से उस समय के सभी शिलालेख, सिक्के और ताम्रपट प्राकृत में मिलते हैं। नानेघाट का शिलालेख या कार्ले-भाजे की गुफाओं में की गई नक्काशी इसके अच्छे उदाहरण हैं।

राजा हाल और 'गाथासप्तशती' सातवाहन काल में, महाराष्ट्र की प्राकृत न केवल महाराष्ट्र में बल्कि दक्षिण भारत में भी मशहूर थी। इस भाषा की मधुरता इतनी थी कि इसे दूसरी प्राकृत भाषाओं के मुकाबले साहित्य में सबसे ऊंचा स्थान मिला और इस समय में भाषा का व्याकरण और भी स्पष्ट हो गया।

• इस किताब में गोदावरी नदी, खेतों में काम करते किसान, महिलाओं की सुंदरता और ग्रामीण जीवन की सादगी का वर्णन है।

• इसमें कई मराठी शब्दों की जड़ें हैं, यही वजह है कि इसे मराठी भाषा का पूर्वज माना जाता है।

गुणढ्य की रचना 'बृहत्कथा' राजा हाल के दरबार में कवि रहे गुणाढ्य ने प्राकृत भाषा 'पैशाची' में 'बृहत्कथा' नामक महान रचना लिखी। हालांकि यह भाषा महाराष्ट्रीयन से अलग है, लेकिन इससे यह स्पष्ट है कि सातवाहन राजाओं के समय में प्राकृत साहित्य कितना महत्वपूर्ण था। बाद में इसी किताब के आधार पर 'कथासरित्सागर' जैसी प्रसिद्ध संस्कृत किताबें लिखी गईं।

गुफाओं और बोलचाल की भाषा स्वरुप : अजंता, वेरुल, नासिक और जुन्नर की पांडव लेणी की गुफाओं की खुदाई में जिन दानदाताओं के नाम खुदे हुए हैं, उनके नाम प्राकृत भाषा में हैं। इससे पता चलता है कि उस समय आम व्यापारियों, कारीगरों और किसानों के बीच बातचीत की भाषा प्राकृत थी।

महाराष्ट्रीयन प्राकृत साहित्य: महाराष्ट्रीयन प्राकृत में बहुत बड़ा और अच्छा साहित्य लिखा गया है। यह साहित्य ज़्यादातर कविता और कहानी के रूप में है।

अ) गाथासप्तशती (हाल सातवाहन) सातवाहन वंश के 17वें राजा 'हाल' खुद एक महान कवि और साहित्य के प्रेमी थे। उन्होंने महाराष्ट्र की प्राकृत में 700 गाथाओंकी रचना कीं और सुप्रसिद्ध 'गाथा सप्तशती' हमारे सामने उपस्थित है।b) सेतुबंध (प्रवरसेन) एक महाकाव्य है जिसे 'रावणवहो' (रावण का वध) के नाम से भी जाना जाता है। इसे वाकाटक राजा प्रवरसेन ने लिखा था। इसमें भगवान रामचंद्र के लंका पर हमले के बारे में बताया गया है। इसकी भाषा इतनी मैच्योर और सुंदर है कि कवि कालिदास ने भी इसकी तारीफ़ की है।

c) गौड़वहो: वाक्पतिराज द्वारा विरचित इस रचना में कन्नौज के राजा यशोवर्मन द्वारा गौड़ के राजा की पराजय के बारे में बताया गया है। यह एक ऐतिहासिक पद्य रचना है।

d) जैन साहित्य - जैन धर्म के कई ग्रंथ महाराष्ट्रीयन प्राकृत में लिखे गए थे। जैन कवियों ने रामायण और महाभारत की कहानियों को प्राकृत में लाया। विमलसूरी की 'पउमचरीउ' (पद्मचरित) इसका एक उदाहरण है।

प्राकृत भाषा और अपभ्रंश: 600 AD के बाद, प्राकृत भाषाएँ भी पुरानी होने लगीं और आम लोगों की बोलचाल से दूर होती गईं। इससे 'अपभ्रंश' भाषा का उदय हुआ। अपभ्रंश, प्राकृत और आज की मराठी के बीच की कड़ी है। ग्रामर के जानकार 'हेमचंद्र' ने प्राकृत और अपभ्रंश के नियम लिखे, जिससे इन भाषाओं की ग्रामर को समझना आसान हो गया।

प्राकृत और मराठी के बीच 'माता–पुत्री' का रिश्ता है। अगर हम मराठी भाषा की जड़ों को खोजें, तो वे सीधे 'महाराष्ट्री प्राकृत' और उसके बाद की 'अपभ्रंश' भाषा में मिलती हैं। यह सफ़र सिर्फ़ शब्दों का नहीं है, बल्कि यह व्याकरणीक, उच्चारण और संस्कृति की विरासत है। इन दोनों भाषाओं के बीच के रिश्ते को इन बातों के आधार पर समझाया जा सकता है:

प्राकृत और कोंकणी: भारतीय भाषा विज्ञान के इतिहास को देखें तो 'प्राकृत' और उससे बनी आधुनिक भारतीय भाषाओं अध्ययन बहुत ज़रूरी है। इसमें कोंकणी भाषा की यात्रा खास जिज्ञासा का विषय है। कोंकणी सिर्फ़ एक बोली नहीं बल्कि भारोपीय भाषा समूह की एक समृद्ध और स्वतंत्र भाषा है, जिसकी जड़ें पुरानी प्राकृत भाषा में गहराई से जमी हुई हैं।

कोंकणी भाषा महाराष्ट्रीयन प्राकृत और उसके बाद के बिगड़े हुए रूप से बनी है। भाषाविदों के अनुसार, कोंकणी महाराष्ट्री प्राकृत के उस रूप से बनी है जिसे दक्षिण कोंकण और गोमांतक (गोवा) में रहने वाले लोगों ने अपनाया था।

कोंकणी का विकास : 10वीं से 11वीं सदी तक, मॉडर्न भारतीय भाषाएँ जो मराठी, कोंकणी, गुजराती, हिंदी आदी बिगड़ी हुई भाषाओं से ही उभरने लगीं। कोंकणी की खासियत यह है कि इसने आज भी प्राकृत के कई पुराने शब्दों और व्याकरण के रूपों को बचाकर रखा है, जो समय के साथ दूसरी उस समय की भाषाओं में खो गए है।

पुराने सहसंदर्भ एवं ऐतिहासिक साक्ष्य: कोंकणी और प्राकृत के बीच संबंध के कई साक्ष्य शिलालेखों, ताम्रपट और पुराने साहित्य में मिलते हैं।

शिलालेख: श्रवणबेलगोल में गोमटेश्वर की प्रतिमा के प्राप्त 'श्रीचामुंडराये करवियले' शिलालेख 10 वीं शताब्दी का है। इसमें प्रयुक्त की गई भाषा के आधार पर, मराठी और कोंकणी दोनों भाषा के विद्वान इसे अपना बताते हैं। यह भाषा प्राकृत और आज की भाषाओं के बीच का संबंध दर्शाती है।

साहित्यिक संदर्भ: महानुभाव संप्रदाय के साहित्य और ज्ञानेश्वरी में कई ऐसे शब्द मिलते हैं जो आज की मराठी की तुलना में कोंकणी के ज़्यादा करीब हैं। ये शब्द असल में प्राकृत के हैं।

भाषाई समानता: प्राकृत और कोंकणी प्राकृत और कोंकणी के बीच के रिश्ते को साफ़ करने के लिए ये बातें ज़रूरी हैं:

शब्दसंग्रह: आज भी, कोंकणी में कई 'तद्भव' शब्द हैं जो सीधे प्राकृत से आए हैं।

प्राकृत: कम्म (Kamma) > कोकणी: काम (Kam)

प्राकृत: धम्म (Dhamma) > कोकणी: धर्म (Dharm)

प्राकृत: घर (Ghara) > कोकणी: घर (Ghar)

व्याकरण विशेषताये: कोंकणी में नाम के रूप और क्रिया के रुप प्राकृत समान है। खासकर प्रत्यय जुड़ते समय होने वाले बदलावों में प्राकृत का असर साफ दिखता है।

ध्वन्यात्मक परिवर्तन: प्राकृत भाषा के द्वित्व को कोंकणी ने आज भी काफी हद तक प्राकृत की मूल ध्वनी को बचाए रखा है।

कोंकणी की खासियत और टकराव कोंकणी भाषा सिर्फ महाराष्ट्र के कोंकण तट तक ही सीमित नहीं है, बल्कि गोवा, कर्नाटक और केरल के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती है। पुर्तगाली शासन और माइग्रेशन के कारण इतिहास में कोंकणी पर कई बार हमले हुए। हालांकि, इस भाषा ने अपनी 'प्राकृत' जड़ों को नहीं छोड़ा।
मध्यकाल में, कोंकणी को 'ब्राह्मण' भाषा के रूप में भी जाना जाता था। पुर्तगालियों के आने के बाद, कोंकणी साहित्य पर बैन लगा दिया गया, लेकिन लोकगीतों (ओव्या, ढालो) के ज़रिए यह भाषा बची रही।

कोंकणी और मराठी: मराठी और कोंकणी दोनों की माता 'महाराष्ट्री प्राकृत' है। इसलिए, ये दोनों भाषाएँ बहनों जैसी हैं। हालाँकि, व्याकरणसे, कोंकणी मराठी से अलग है और कुछ मामलों में ज़्यादा पुरानी

लगती है। कोंकणी में लिंग भेद और उच्चारण के नियम मराठी से ज़्यादा जटिल और अलग-अलग तरह के हैं, जो इसे एक अलग भाषा का दर्जा देते हैं।

मराठी और कोंकणी (गोमंतकिया, मालवाणी) इंडो-आर्यन भाषा परिवार की बहन भाषाएँ हैं, दोनों की शुरुआत महाराष्ट्रीयन प्राकृत से हुई है। शब्द, व्याकरण और शब्दसंग्रह के मामले में उनमें काफी समानता है, हालाँकि कोंकणी पुर्तगाली, कन्नड़ और अरबी से ज़्यादा प्रभावित है।

मराठी आणि कोकणी शब्द साधर्म्य (उदाहरण)

मराठी	**कोकणी/मालवणी**	**अर्थ**
तू / तू	तूं (Tu)	तू
काय / काय	**किदें** (Kide) / **का**	काय
जा / जा	**वच** (Vach) / **वच**	जा
ये / ये	**येव** (Yev) / **ये**	ये
पाणी / पाणी	उदक (Udak) / **पाणी**	पाणी
घर / घर	**घर** (Ghor)	घर
मुलगा / मुलगा	**भुरगो** (Bhurgo) / **पोरो**	मुलगा
मुलगी / मुलगी	**भुरगी** (Bhurgi) / **पोरी**	मुलगी
मी / मी	**हांव** (Hanv) / **मी**	मी
सकाळ / सकाळ	**सकाळें** (Sakale) / **सकाळ**	सकाळ

महाराष्ट्री प्राकृत एवं कोकणी शब्द तुलना:

प्राकृत: *अज्ज* (आज) →**कोकणी:** आजू	**प्राकृत:** *पुत्त* (मुलगा) → **कोकणी:** पूत

प्राकृत: *घर* (गृह) →**कोकणी:** घर	: *सायब* (साहेब/स्वामी) → **कोकणी:** सायबा/सायबिणी
प्राकृत: *पच्ची* (आई/माता) → **कोकणी:** पची (उत्तर कन्नड कोकणी)	**प्राकृत:** *जाउअ* (जाणे) →**कोकणी:** वचप/वच
प्राकृत: *कम्म* (कर्म/काम) →**कोकणी:** काम/काम्म	
कोकणीतील कुछ विशेष शब्द (गोवन/मालवणी शैली):	
आता/आत्ता (आता)	**कोणा** (कोणाला)
तुका/म्हाका (तुला/मला)	**तशें/अशें** (तसे/असे)
भायर (बाहेर)	**जेवण** (जेवण)

कोंकणी में संस्कृत के समान शब्द कम हैं, इसकी प्राकृत-आधारित वोकैबुलरी, शब्द स्ट्रक्चर और बोलने का तरीका अलग है।

निष्कर्ष : प्राकृत आधुनिक भारतीय भाषाओं की माँ है, जबकि कोंकणी उन बेटियों में से एक है जो अपनी विरासत को उसके सबसे शुद्ध रूप में बचाकर रखती है। हालाँकि कोंकणी का इतिहास संघर्षों का रहा है, लेकिन इसने आज भी अपने पुराने भाषाई संदर्भों को ज़िंदा रखा है। कोंकणी भाषा का अध्ययन करना खुद प्राकृत के विकास की पढ़ाई करने जैसा है।

संदर्भ :

प्राकृत भाषा का इतिहास, जगदीशचंद्र जैन, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी

प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, नेमिचंद्र जैन, तारा प्रकाशन, वाराणसी

गाथासप्तशती, हाल, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे